# विनोबा भावे जी के शैक्षिक उद्देश्यों की प्रसंगिकता

डॉ. श्याम बहादुर सिंह
सह-आचार्य (बी.एड्.विभाग)
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, गोण्डा

प्रस्तावना :

शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात ही मानव श्रेष्ठ प्राणी बनता है। जीवन में शिक्षा के द्वारा ही उदारता, उच्चता, श्रेष्ठता, उत्कृष्टता एवं सौन्दर्य सम्भव है। शिक्षा के द्वारा प्राप्त ज्ञान से ही व्यक्ति में विभिन्न कौशलों का विकास होता है और इसी से वह अपने जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान कर सकता है। विनोबा भावे जी के अनुसार शिक्षा के दो स्वरूप है। प्रथम आन्तरिक शिक्षा एवं द्वितीय बाह्य शिक्षा । इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि ये दोनों एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। वस्तुतः सच्ची शिक्षा दोनों प्रकार की शिक्षाओं का मेल ही है। विनोबा भावे जी शिक्षा को सीखने की प्रक्रिया से जोड़ते है, वे बताते हैं कि सीखना एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। अतः शिक्षा की प्रक्रिया भी जन्म से मृत्युपर्यन्त चलती रहती है। शिक्षा को तभी प्राकृतिक कहा जायेगा जब सीखने की क्रिया इस प्रकार की हो कि बच्चे को पता ही न चले कि वह कुछ सीख रहा है। विनोबा जी के अनुसार शिक्षा इतनी सहज और स्वाभाविक होनी चाहिए कि न तो विद्यार्थी को यह पताही न चले कि उसे शिक्षा मिल रही है और न शिक्षक यह जान पाये कि वह शिक्षा दे रहा है। आचार्य विनोबा भावे जी का तो यहाँ तक कहना है कि हमें समझ लेना चाहिए कि शिक्षा में कुछ गड़बड़ी है।

विनोबा भावे जी ने शिक्षा को सहज प्रक्रिया मानते हुये यह बताया कि शिक्षा वह है जो सरलता से जीवन जीना सिखाती है। शिक्षा वह है जो जीवन जीने के तरीके व सलीका बता सके। महाभारत में अर्जुन के सामने जब कर्तव्य का सवाल पैदा हुआ तब उसका उत्तर देने के लिए भगवद्गीता निर्मित हुई। इसी का नाम शिक्षा है। बच्चे स्वयं कार्य करें जब कोई सवाल (समस्या) पैदा हो तो उसका उत्तर देने के लिए जिस प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता हो उसे प्रदान करें। यह सच्चा शिक्षण होगा। बच्चों के आसपास उनका मार्गदर्शन करने वाले मनुष्य होने चाहिये। शिक्षण कर्तव्य कर्म का आनुषंगिक फल है। जो कोई कर्तव्य करना है उसे जाने-अनजाने वह मिलता है। बच्चों को भी वह उसी तरह मिलना चाहिये। उनके आसपास ऐसा वातावरण बनाना चाहिये कि व बहुत ठोकरे न खाने पायें और धीरे-धीरे स्वावलम्बी बने। शिक्षण सहज होना चाहिये। इसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी बगैर किसी आडम्बर के शिक्षा देते एवं ग्रहण करते हैं। शिक्षा एक कर्तव्य है, ऐसी कृत्रिम भावना की अपेक्षा शिक्षा का अर्थ आनंद है, यह प्राकृतिक और उत्साह भरी भावना से होना चाहिये। वर्तमान में दोनों का अभाव है।

विनोबा जी कहते है कि शिक्षा हमें साक्षर बनाने वाली नहीं सार्थक बनाने वाली होनी चाहिये। शिक्षा के तीन तथ्य महत्वपूर्ण है द्र "योग उद्योग सहयोग" उनके अनुसार योग का अर्थ है चित्त पर अंकुश लगाना, इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना, मन पर काबू पाना, जुबान पर लगाम लगाना आधुनिक समय पर इसकी नितान्त आवश्यकता है। शिक्षा का दूसरा तथ्य या विषय उद्योग है। शिक्षा के द्वारा उद्योग का विकास होना चाहिये क्योंकि बिना उद्योग के न किसी गुण का विकास होता है और न गुणों की परख होती है। तीसरा तथ्य है सहयोग। सहयोग के अन्दर सारा समाजशास्त्र,



Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाशास्त्र आदि आता है। उनके अनुसार सहयोग का अर्थ है समभाव या एक-रूपता। जैसे – हम भारतवासी हैं। इस तरह एकता की अनुभूति के साथ सहयोग।

धार्मिक या अध्यात्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में विनोबा जी कहते हैं कि आज धर्म शब्द का अर्थ संकुचित और समाज भंजक बन गया। उनके अनुसार पाठशालाओं में धर्म शिक्षण नहीं होना चाहिये। आपका मानना है कि चरित्र-निष्ठा, ईश्वर विषयक श्रद्धा और देह से पृथक आत्मा का भाना यही धर्म का सार है और यह सत्संगति से ही मिलता है। इसके लिए सबसे उपयुक्त बात यह है कि सुशील शिक्षकों की योजना करना ही मेरी धर्म शिक्षा की योजना है। स्त्री शिक्षा को विनोबा जी ने कितना महत्व दिया उनका वर्णन इस प्रकार - उन्होंने कहा कि सबसे पहले लड़कियों को पढ़ाना होगा उन्हें तो लड़कों से भी अधिक ज्ञान की आवश्यकता है क्योंकि लड़के बड़े होकर मेहनत करेंगे, अनाज की पैदावार बढ़ायेंगे। स्त्रियां बच्चों को पढ़ायेंगी यानि राष्ट्र को पढ़ायेंगी। उनका मानना है कि पहले पांच साल की शिक्षा स्त्रियां ही दे पायेंगी। वह पुरूष का काम नहीं इसलिए स्त्रियों के पास ज्ञान की चाभी होना चाहिये।

हर घर में बिल्कुल से मां से ज्ञान पाने की सुविधा हो जाये, तो फिर पूछना ही क्या है? छोटे बच्चों को अपेक्षित शिक्षण- स्कूल में नहीं मिल सकता, वह मां ही दे सकती है इसलिए उसे ज्ञान की आवश्यकता है।

विनोबा जी के अनुसार – नई शिक्षा उसी प्रकार की शिक्षा प्रणाली है जो ऐसे ज्ञान की वकालत करती है जो किसी व्यवसाय में दक्षता प्रदान कर सके तथा मानसिक रूप से विकसित कर सके। उनके अनुसार शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिये –

**1.नई समाज रचना** – नई तालीम का प्रथम उद्देश्य ऐसे समाज का निर्माण करना है जिसमें शरीर परिश्रम और शारीरिक, मानसिक परिश्रम की नैतिक और आर्थिक योग्यता है, समान मानी जाये। उन्होंने कहा कि आज की कुल आर्थिक रचना हमें बदलनी है और उसे बदलने के वास्ते नई तालीम है।

**2.साम्य योग और स्वावलम्बन** – साम्ययोग का अर्थ शारीरिक और बौद्धिक कार्यों के मूल्य में कोई अन्तर न किया जाये। में सभी शिक्षकों को समान वेतन दिया जाये। उन्होंने कहा कि नई तालीम में हम शारीरिक और बौद्धिक कार्यों के मूल्य कोई अन्तर नहीं मानते। हम मानते हैं कि नेतृत्व व्यवस्था आदि में भी वेतन का अन्तर नहीं होना चाहिये। सच पूछिये तो वेतन शब्द ही गलत है, उनके लिये तो दक्षिणा कहना ही ठीक होगा। स्वावलम्बन शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये। उन्होंने नई तालीम में इस पर निम्न प्रकार का जोर दिया है – अगर साम्ययोग और स्वावलन्बन ये दो गुण हमारी शिक्षा में न हो तो हमारी शिक्षा के दोनों फेफड़े नष्ट समझिये।

**3.नये मूल्यों की स्थापना** – शिक्षा का उद्देश्य नये मूल्यों की स्थापना होनी चाहिये। यह समभाव या समता के मूल्यों पर आधारित होनी चाहिये। नई तालीम यानि नये मूल्यों की स्थापना। पुरानी तालीम चोरी करने को पाप समझाती थी। नई तालीम न केवल चोरी को बल्कि अधिक संग्रह को भी पाप समझती है। पुरानी तालीम शारीरिक और मानसिक परिश्रमों के मूल्य में फर्क करती थी। नई तालीम दोनों का मूल्य समझती है। इतना ही नहीं, दोनों को समन्वय करती है, दोनों का समवाय साधती है। पुरानी तालीम क्षमता की इज्जत करती थी। नई तालीम दक्षता को समता की दासी समझती है।

**4.मानवता का विकास** – नई तालीम का उद्देश्य मानवता का विकास होना चाहिये। नई तालीम मानवता को पूजती है और उसे सेवा का साधन समझती है।



Scanned with OKEN Scanner

**5.सामूहिक भावना का विकास-** शिक्षा का यह महत्वपूर्ण उद्देश्य है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामूहिक भावना का विकास कर सके। विद्यार्थियों में सामूहिक रूप से एक साथ मिलजुलकर काम करने की भावना उत्पन्न न हुई तो हमारे शिक्षकों ने कुछ नहीं किया। वह सामूहिक भावना हम लोगों में प्रायः बहुत कम है।

**6.कलात्मकता का विकास-** शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिये जो हमारे अन्दर कलात्मक भावना का विकास कर सके। विनोबा भावे ने न्याय देवता के चित्र के सन्दर्भ में बताया है कि न्याय देवता की आंख की पट्टी बांधने का संकेत यह है कि अंधा सब में कोई अन्तर नहीं देखता। अतः अन्धेपन का अर्थ है पक्षपात शून्यता। न्याय देवता का स्त्री रूप देने का संकेत यह है कि स्त्रियां स्वभावत दयालु होती है इसीलिए न्याय देते समय भी दयालुता रहनी चाहिये। तराजू की डंडी सीधी पकड़ने का संकेत यह है कि न्याय में चोखापन होना चाहिये। इस तरह सांकेतिक चित्र द्वारा न्याय के आवश्यक तीन गुण निष्पक्षता, दयालुता और खारापन दिखाये गये हैं।

**सन्दर्भ-**


1. सर्वोदय सम्मेलन पुरी में दिये प्रवचन से 25 मार्च, 1955.
2. विनोबा भूदान गंगा, भाग -3.
3. नई तालीम सम्मेलन, सेवाग्राम में दिये गये प्रवचन
4. विनोबा प्रवचन नं0 2-24-11-1962.
5. मजूमदार, धीरेन्द्र (1971) 'शिक्षा में क्रान्ति और आचार्यकुल',
6. विनोबा भावे (1973) "आचार्य कुल", पंचम संस्करण, वाराणसी : सर्व सेवासंघ प्रकाशन,
7. विनोबा भावे (2010) 'तीसरी शक्ति सातवाँ संस्करण, वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन, द्य
8. शाह, कान्ति (2009). "विनोबा जीवन और कार्य', सर्व सेवा संघ, वाराणसी, 2009, द्य
9. विनोबा भावे (1979) 'शिक्षा की दिशा', मैत्री,
10. शाह, कान्ति (2009). "विनोबा जीवन और कार्य'. सर्व सेवा संघ, वाराणसी, 2009,
11. विनोबा (1964) "थ०ट्स अ०न एज्यूकेशन' वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन,
12. विनोबा (2010) शिक्षण विचार वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन,




Scanned with OKEN Scanner